OPEN ACCESS

Int. Jr. of Contemp. Res. in Multi. *PEER-REVIEWED JOURNAL* *Volume 5 Issue 1 [Jan- Feb] Year 2026*

Research Article

आधुनिक समय में जातिवाद का आलोचनात्मक अध्ययन

किरण वर्मा *

सहायक प्राध्यापक, विधि विभाग, बाबू दिनेश सिंह विश्वविद्यालय गढ़वा, झारखंड, भारत

Corresponding Author: *किरण वर्मा

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18400119

सारांश

यह पेपर आधुनिक समय में जातिवाद की आलोचनात्मक जांच करता है, जिसमें वैदिक काल की कर्म-आधारित वर्ण व्यवस्था (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) से लेकर कठोर जन्म-आधारित पदानुक्रम तक के विकास पर प्रकाश डाला गया है, जो सामाजिक विभाजन और असमानता को बढ़ावा देता है। लेखक तर्क देते हैं कि जातिवाद सामाजिक सद्भाव को कमजोर करता है, शत्रुता को बढ़ावा देता है और राष्ट्रीय प्रगति में बाधा डालता है, जो प्राचीन समानता और मानव एकता के आदर्शों के विपरीत है। ऐतिहासिक व्यक्तित्वों जैसे भगवान बुद्ध, जो समानता के पक्षधर थे, और सुधारकों जैसे डॉ. बी.आर. अंबेडकर तथा ज्योतिबा फुले का हवाला देते हुए, अध्ययन आत्म-जागरूकता, शिक्षा और समावेशी सोच के माध्यम से जाति-आधारित भेदभाव को समाप्त करने की अपील करता है। यह जोर देता है कि सच्ची आधुनिकता जातिगत पूर्वाग्रहों से ऊपर उठकर स्थायी शांति और सामाजिक विकास प्राप्त करने की आवश्यकता है, तथा भारत को वैश्विक नेता के रूप में बहाल करने के लिए निरंतर प्रयासों का आह्वान करता है। संदर्भों में दलित चेतना, अंबेडकर और सामाजिक क्रांतिकारियों पर कार्य शामिल हैं।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 05-11-2025
- **Accepted:** 29-12-2025
- **Published:** 28-01-2026
- **IJCRM:**5(1); 2026: 326-328
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

किरण वर्मा. आधुनिक समय में जातिवाद का आलोचनात्मक अध्ययन. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(1):326-328.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: जातिवाद, आधुनिक समाज, वैदिक परंपरा, वर्ण व्यवस्था, जन्म आधारित जाति, सामाजिक समानता, भगवान बुद्ध के विचार ,अंबेडकर ज्योतिबा फुले, समाज सुधार

प्रस्तावना

भारत आधुनिक समय में हम जितनी ही आधुनिकता की ऊंचाई प्राप्त करते जा रहे हैं इस तरह नैसर्गिक शांति से दूर होते जा रहे हैं1 अपने को स्वयं को बड़ा बनने के कारण हम सामाजिकता से दूर होते जा रहे हैं1 आजकल का मनुष्य या समाज से कटता जा रहा है और अपनी ही दुनिया में खोता जा रहा है1मनुष्य में समाज का गुण विलुप्त होते जा रहा है जिसके कारण वर्ण व्यवस्था हावी होती जा रही है1समाजिकताका आशय लोगो में बराबरी ,मिलनसार और समन्वय की गुण हो 1वर्णवाद आज एक विकराल रूप धारण करते जा रही है 1वर्णवाद का सिधान्त जो समाज के ही लोगो में एक दुसरे से अंतर करने में पीछे नहीं रहती है 1 आधुनिकता का पर्याय हो गया है वर्णवाद1 इस वर्णवाद के कारण ही आज समाज में वैमनष्य की

© 2026 किरण वर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

भावना घर कर गई है 1 इस समस्या का खात्मा कैसे हो इस पर चर्चा अवश्य होनी चाहिए1 किसी भी समस्या को छोड़ देने से वह विकराल रूप धारण कर लेती है1 जब तक हम क्या शांति की खोज के लिए अग्रसर नहीं होंगे वर्णवाद की समस्या बनी ही रहेगी1 हमारा देश अतिथि देवो भव और पूरी दुनिया के लोग परमपिता परमेश्वर के ही संतान हैं तो फिर लोगों में अंतर करने का अधिकार कैसे मिल गया है 1

वैदिक परंपरा में जातिवाद: वैदिक काल में जाति को कर्म के आधार पर वर्गीकृत किया गया था1 जिसमें चार तरह के वर्ण की बात की गई थी जो इस तरह है ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र1 ब्राह्मण का काम लोगों को शिक्षा देने के लिए, क्षत्रिय रक्षा करने के लिए ,वैश्य व्यापार के लिए और शूद्र का कार्य उपरोक्त की सेवा करना था 1जो जिस प्रवृत्ति का कार्य करने में सक्षम था उसको उसी तरह की जिमेदारी दी जाती थी1 एक वास्तविकता थी कि यह व्यवस्था कर्म आधारित थी ना कि वंश के आधार पर इसी आधार पर इसी आधार पर चार आश्रम की व्यवस्था थी 1चार आश्रम इस प्रकार है- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा सन्यास 1जीवन जीने का ढंग उस काल में बताया गया था1जिसमें किसी को कोई समस्या नहीं हुई 1

जातिवाद समस्या का मूल कारण: वास्तविक रूप में समझा जाए तब ज्ञात होता है कि समाज में दो ही तरह के लोग हैं वह है स्त्री तथा पुरुष जाति1 प्राचीन काल में वर्ण व्यवस्था केवल समाज की गाड़ी को सुचारू ढंग से चलने के लिए था1 आज की समस्या उत्पन्न तब हुई जब वंश के आधार पर या जन्म के आधार पर यह व्यवस्था होनी शुरू हो गई1 आज समस्या यह है कि अगर किसी व्यक्ति का कार्य शुद्र प्रवृत्ति का हो और अगर वह ब्राह्मण समाज में जन्म लिया हो तब भी वह ब्राह्मण ही कहलाएगा 1अगर कोई शुद्र वर्ण का है और वह अध्ययन कार्य में है यानी कि वह ब्राह्मण का कार्य कर रहा है फिर भी वह शुद्र ही होगा क्योंकि यह व्यवस्था वंश और जन्म आधारित हो गई है 1

जातिवाद एक मिथ्या: आधुनिक समय में सुकरात की कही गई बात पर अमल करना अत्यंत आवश्यक है1 उनका कथन है "स्वयं को जानो" क्या आज के समय में हम अपने आप को जानने का प्रयास कर रहे हैं1 अगर हम चिर शांति की खोज में रहते तो आज यह समस्या ही नहीं रहती 1यहां खुद के बारे में जानने का अर्थ उच्चतर कोटि का है1 खुद को यानी कि मानवता को जानना 1जैन दर्शन में बताया गया है कि अगर कोई एक विषय आदि के बारे में ठीक-ठाक ज्ञान प्राप्त कर लिया तो संभव है कि इस धरा पर विद्यमान सारी चीजों का ज्ञान हो जाए1 ठीक ऐसी ही चर्चा खुद के बारे में जानने से है1 जब ऐसी बात होगी तो हम वर्णवाद से खुद को अलग करने का प्रयास करेंगे1 हमें धरा के अन्य जीवों से सीखने की जरूरत है 1मानव धर्म यह की मिल जुल कर रहो और किसी भी आसन्न संकट में एक साथ सामना करो और समाधान ढूंढो 1अगर अन्य जीवों की बात करें तो उनमें कभी अंतर ही नहीं होता 1 यह वर्ण व्यवस्था ही ऐसी हो गई है जो कर्म आधारित न रहकर जन्म आधारित हो गई है 1 ऐसी समस्या जो प्राकृतिक नहीं हो खुद का ही उत्पन्न किया गया हो उसका खात्मा होना चाहिए और मानव सभ्यता चिरशांति की खोज में कार्य करने के लिए उद्वेलित हो ताकि वर्ण व्यवस्था वंशानुगत न रह जाये 1 कोई अगर विकास के मामले में हमसे आगे जा रहा है तो हमें उससे विद्वेष नहीं रखना चाहिए 1हमें अन्य लोगों के लिए सद विचार रखना चाहिए1 बुरे विचार किसी के प्रति नहीं रखना चाहिए 1ऐसे में हम मानव समाज का विकास तो दूर हम अपना भी विकास नहीं कर पा रहे हैं1

बौद्धिक काल में जातिवाद: वैदिक काल के बाद वर्ण व्यवस्था का मायना ही दूसरे अर्थों में अवतरित हो गया है 1उस समय के बाद बौद्धिक काल में वर्णवाद की समस्या गंभीर समस्या के रूप में उभर कर सामने आने लगी 1उच्च स्तर का अपनी को समझने वाले लोग अन्य को निम्न स्तर का समझते हैं 1भगवान बुद्ध ने समानता का विचार रखकर समरसता का भाव बनाने का प्रयास किया 1 आज भी भगवान बुद्ध के विचार प्रासंगिक हैं 1 आज की वास्तविकता है कि जो जितना अधिक दबाया जा रहा है उतना ही अधिक बौद्ध धर्म में परिवर्तित होती जा रहे हैं 1 वर्णवाद से पीड़ित लोग वर्णवाद छोड़कर बौद्ध धर्म में जाकर चिरशांति प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं 1 ऐसा इसलिए हो सका है कि भगवान बुद्ध ने मानवता को मुख्य आधार बनाया ना कि वर्णवाद या किसी खास विचारधारा को जिसके आलोक में समस्त सृष्टि के जीवन का उद्धार हो ऐसी भावना के साथ 1

आधुनिक काल में जातिवाद: वैदिक काल के बाद के काल में वर्णवाद गंभीर और खतरनाक रूप में सामने आने लगी 1 उच्च वर्ण के लोग अन्यों को निम्न स्तर का समझने लगे जिसके कारण लोगों में वर्ण संघर्ष का रूप सामने आया 1 भगवान बुद्ध ने आधुनिक काल में वर्ण संघर्ष को रोकने के अथक प्रयास किये लेकिन यह शत प्रतिशत नहीं हो पाया 1 अपितु उनके इन प्रयत्नों ने मानव सभ्यता को एक विकल्प प्रदान करने का कार्य किया जिसका उपयोग समाज में उत्पन्न अंतर को कम या खत्म करने का प्रयास किया 1 संविधान के रचयिता बाबा अंबेडकर जी इसके जीता जागता उदाहरण है 1 आधुनिक काल में वर्णवाद के खिलाफ लड़ाई लड़ी गई है जिसके जिसमें ज्योतिबा गोविंद राव फुले, नारायण गुरु आदि जैसे परमवीर इस मानव समाज की परंपरा को बदलने का पूर्णता प्रयास किया लेकिन संभव नहीं हो पाया 1 इसका मतलब यह नहीं है कि प्रयास ही करना छोड़ दिया जाए 1 उनके प्रयासों से दबे कुचले लोगों का जीवन सुधारने का मार्ग प्रशस्त हुआ है 1 इसके फलस्वरुप समाज की आधी आबादी महिलाओं की स्थिति भी सुधरने लगी इसका श्रेय इन्हीं विचारकों और महापुरुषों को जाता है 1 दलित और पिछड़े लोग एक अच्छा से सुव्यवस्थित जीवन जीने लगे हैं फिर भी समस्या खत्म नहीं हुई है 1 आधुनिक समय में इस पर मनन होना चाहिए और समाधान खोजने का प्रयास अनवरत जारी रहना चाहिए 1

वर्तमान में जातिवाद का मुख्य कारण: आज विपरीत होते जा रहा है जो अपने आप को अधिक आधुनिक बता रहा है वह वर्णवाद को अधिक बढ़ने वाला प्रतीत हो रहा है 1 उच्च शिक्षा ग्रहण करने वाले भी स्वयं को श्रेष्ठ दिखाने का प्रयास करते हैं 1 समस्या का मूल कारण ही यही है 1 अगर इनके घर बच्चा जन्म लेता है तो शुरू में सेवा आदि कार्यों हेतु एक सहायक को बुलाते हैं और उसके साथ इस तरह का बर्ताव किया जाता है कि जैसे वह समाज का हिस्सा ही ना हो आखिर क्यों यह समस्या उन लोगों के द्वारा बढ़ाई जा रही है जो अपने को

© 2026 किरण वर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

आधुनिक समाज का ठेकेदार समझते हैं 1 कहाने को कहते हैं कि हम सभी परमपिता परमेश्वर की संतान हैं तो फिर कैसा अंतर खुद से 1

आज आधुनिकता के दौर में संप्रदाय और वर्ण के आधार पर बटकर अपने देश भारत का विकास बाधित कर दिए हैं 1 जो भारत कभी विश्व गुरु रहा है और वह भारत आज अपनी सम्मानजनक स्थिति प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रहा है 1 लेकिन संघर्ष करना है अपने इन समाज के ठेकेदारों से यह व्यवस्था देशहित में नहीं है और देश हित में वर्णवाद से ऊपर उठकर ध्यान देने की जरूरत है 1 हमारा देश खुद ही उठ खड़ा होगा 1 जैसे कोई बीमार व्यक्ति स्वस्थ हो जाने पर दौड़ने लगता है उसी प्रकार वर्णवाद से बाहर आने पर हमारा देश विश्वगुरु आज भी बन सकता है 1

बहुत लोगों की समस्या है कि वर्णवाद खत्म होने पर समाज कैसे चलेगा यह उनकी तुच्छ विचारधारा और अज्ञानता है जैसे ही आप इन बुराइयों को छोड़ेंगे नई व्यवस्था खुद आकर ले लेगी जहां इन समस्याओं का खात्मा हो जाएगा 1 हमें जरूरत है शिक्षित होने के साथ-साथ अच्छे विचारों का विकास हमारे जीवन में हो 1 हम तभी उच्चतर जीवन जी सकते हैं 1 जब हम पूरी दुनिया का कल्याण हो इस विचारधारा को केवल कहें ही नहीं आत्मसात करने का भी प्रयास करें 1

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सिंह अनीता. दलित चेतना और हिंदी साहित्य. नई दिल्ली: यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन; 2012.
2. गैल. अंबेडकर इन एनलाइटेंड इंडिया. नई दिल्ली: पेंगुइन रैंडम हाउस; 2017.
3. वीर धनंजय. महात्मा ज्योतिबा फुले: द फादर ऑफ इंडियन सोशल रिवॉल्यूशन. बॉम्बे; 1997.
4. सिन्हा पुष्पा. मानवाधिकार की असीमित सरहदे. नई दिल्ली: किताब घर प्रकाशन; 2015.
5. स्वामी प्रभाव कुमार. समाज सुधार में ज्योतिबा फुले का योगदान. जोधपुर; 2007.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

किरण वर्मा सहायक प्राध्यापक, विधि विभाग, बाबू दिनेश सिंह विश्वविद्यालय, गढ़वा, झारखंड, भारत में कार्यरत हैं। वे सामाजिक न्याय, जातिवाद तथा वर्ण व्यवस्था के आलोचनात्मक अध्ययन में विशेष रुचि रखती हैं। उनकी हालिया शोध-पत्रिका "आधुनिक समय में जातिवाद का आलोचनात्मक अध्ययन" में उन्होंने वैदिक कर्म-आधारित वर्ण व्यवस्था से जन्म-आधारित जातिवाद तक के विकास और समाधान पर गहन चर्चा की है। समाज सुधार एवं समानता के प्रति समर्पित।

© 2026 किरण वर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/